श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, भदेसर

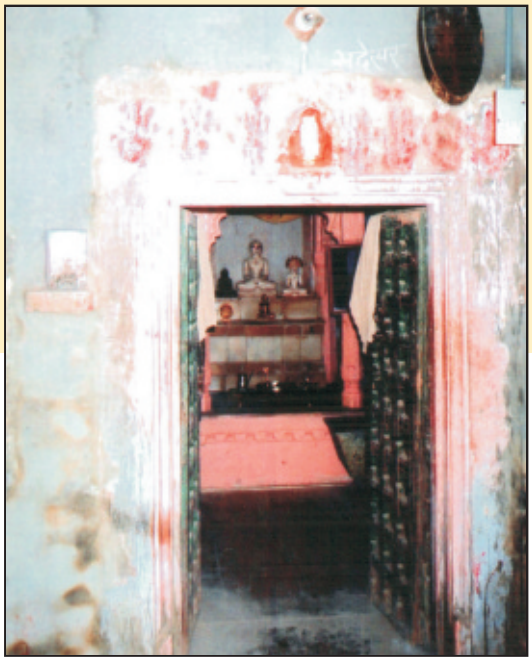

यह घूमटबंद मंदिर मंगलवाड़ चौराहा से 18 किलोमीटर दूर है। उल्लेखानुसार, कथनानुसार यह मंदिर संवत 1800 के लगभग निर्मित है। यह द्वितीय श्रेणी का ठिकाना रहा है। सलूम्बर के रावल भीमसिंह के दूसरे पुत्र भैरवसिंह के वंशज हैं। इनको रावत की उपाधि दी।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1 श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है । इस पर संवत 2024 चैत्रसुदि 3 का लेख है।

2 श्री आदीश्वर भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है । इस पर कोई लेख नहीं है।

3 श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है ।

उत्थापित प्रतिमाएँ एवं यंत्र धातु की :

1 श्री आदीश्वर भगवान की 7' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत 2051 का लेख है ।

2 श्री सिद्धचक्र यंत्र 4.5 गोलाकार है । इस पर संवत 2051 चैत्रसुदि 13 का लेख है।

वार्षिक ध्वजा नहीं चढ़ाई जाती है। मंदिर के भवन की स्थिति व व्यवस्था के बारे में विचार करना चाहिए। **मंदिर के पास ही उपाश्रय है।**

वर्तमान में सकलेचा परिवार रूचि लेता है लेकिन व्यवस्था असंतोष की परिभाषा में आती है। **जीर्णोद्धार की आवश्यकता है। प्राचीन प्रतिमा चोरी हो गई थी, उसका वाद न्यायालय में चल रहा है।**

भदेसर स्थानकवासी आचार्य श्री शांतिमुनि म.सा. की जन्म स्थली है ।

समाज की ओर से सम्पर्क सूत्र – मोबाइल : 9950180 88

यदि जगत में 'गेस्ट' की हैसियत से रहना आ गया तो मानो पूरा जगत आपका अपना है।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, भादसोड़ा

यह घूमटबंद मंदिर मंगलवाड़ चौराहा से 15 किलोमीटर व चित्तौड़गढ़ से 30 किलोमीटर दूर, ग्राम के बीच स्थित है। नजदीक का रेल्वे स्टेशन चित्तौड़गढ़ है। कथनानुसार यह मंदिर करीब 200 वर्ष प्राचीन होना बताया गया है, जो प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार सही प्रतीत होता है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित हैं

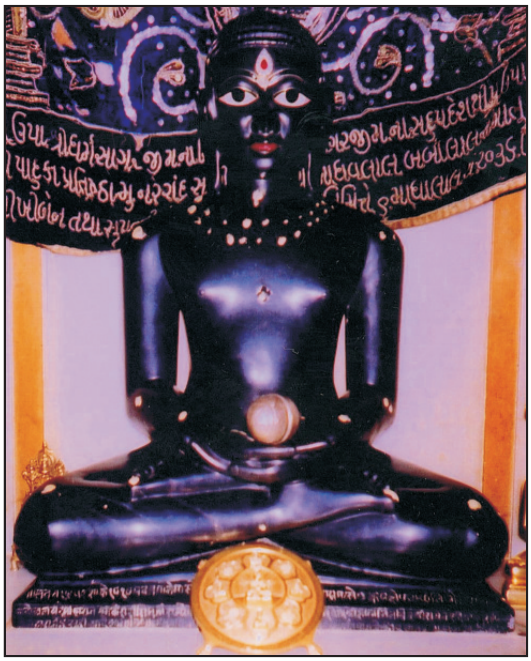

1. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर विक्रम संवत् 1852 वैशाख शुक्ला 5 (राजा केसरीसिंह जी) का लेख है।
2. श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएँ) श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची है। इस पर कोई लेख नहीं है।
3. श्री जिनेश्वर भगवान की श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है।
4. श्री महावीर भगवान की (मूलनायक के दाएँ) श्वेत पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1886 का लेख है।
5. श्री जिनेश्वर भगवान की (मूलनायक के बाएँ) श्याम पाषाण की 7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं एवं यंत्र :

1. श्री चतुर्विंशति 12'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर दिनांक 15.02.09 का लेख है।
2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 8'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1521 माघ सुदि 2 का लेख है।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 4'' ऊँची प्रतिमा है। (इस पर आरजण लिखा है)

4–6 श्री जिनेश्वर भगवान की 2'', 2' , 1.5'' की ऊँची प्रतिमा हैं। इन पर कोई लेख नहीं है।

7. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2056 माघ कृष्णा 5 का श्री जितेन्द्र सूरि जी म.सा. द्वारा प्रतिष्ठित है।

8. श्री विमलनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2037 का लेख है।

9. श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊँची पाषाण की प्रतिमा है। इन पर कोई लेख नहीं है।

10. श्री धरणेन्द्र देव की 1.7'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

11. श्री सिद्धचक्र यन्त्र 5'' गोलाकार है। इस पर सं. 2037 ज्येष्ठ कृष्णा 13 का लेख है।

12. श्री सिद्धचक्र यन्त्र 6.5'' का गोलाकार है। इस पर सं. 2023 का लेख है।

13. श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' x 3'' के आकार का है। इस पर सं. 2065 का लेख है।

बाहर निकलते समय दाएँ :

1. श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। यह श्री जितेन्द्रसूरि जी द्वारा प्रतिष्ठित है।

2. श्री नाकौड़ा भैरव की श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं.2037 ज्येष्ठ कृष्णा 10 का लेख है।

बाहर निकलते समय बाएँ :

1. श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

2. श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

मंदिर के साथ 4 दुकानें व 12 बीघा जमीन है जो समाज के सदस्यों के अधिकार में है जिसका किराया आता है, उससे मंदिर का दैनिक व्यय होता है।

वार्षिक ध्वजा ज्येष्ठ कृ. 10 को चढ़ाई जाती है।

सम्पर्क सूत्र - श्री राजमल जी भादविया फोन 01470-245226

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, बानसेन

यह शिखरबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ से 25 किलोमीटर दूर ग्राम के बीच में स्थित है। इसका नजदीक का रेल्वे स्टेशन चित्तौड़गढ़ है। इसका प्राचीन नाम वनोण भी कहा जाता है। उल्लेखानुसार इस मंदिर का निर्माण सं. 1100 का है लेकिन प्रत्यक्ष रूप से ऐसा प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ। ग्राम के सदस्य भी 1000 वर्ष प्राचीन बताते हैं।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएं स्थापित है :

1. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 27'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 1980 शाके 1845 का लेख है।
2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएँ) श्वेत पाषाण की 10'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।
3. श्री चन्द्रप्रभ भगवान की (मूलनायक के बाएँ) श्याम पाषाण की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

उत्थापित धातु की प्रतिमाएं व यंत्र :

1. श्री महावीर भगवान की 8.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2043 का लेख है।
2. श्री मुनिसुव्रत भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1513 का लेख है।
3. श्री शीतलनाथ भगवान की 7.5'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1513 का लेख है।
4. श्री मुनिसुव्रत भगवान की 7'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 1562 का लेख है।

5. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 3.5'' व 2.5'' ऊँची प्रतिमा है।

7. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर सं. 2040 का लेख है।

8. श्री जिनेश्वर भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

9. श्री सिद्धचक्र यंत्र 5'' का गोलाकार है। इस पर 2040 माघ कृष्ण प्रतिपदा का लेख है।

10. श्री अष्टमंगल यंत्र 5'' x 3'' का है। इस पर वीर सं. 2511 का लेख है।

11. श्री अजितनाथ भगवान की 1.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।

12. श्री सिद्धचक्र यंत्र 5'' गोलाकार है। इस पर कोई लेख नहीं है।

बाहर सभा मण्डप में :

1. श्री आदिनाथ भगवान की पादुका 8'' x 8'' श्वेत पाषाण के पट्ट पर स्थापित है।(दांए)

2. श्री गौमुख यक्ष की श्याम पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 2055 का लेख है। (दाएं)

3. श्री चक्रेश्वरी देवी की श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 2055 का लेख है। (बाएं)

4. श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर वि. सं. 2055 का लेख है। (बाएं)

तीन मंगलमूर्ति स्थापित है। **वार्षिक ध्वजा पौष कृष्णा 3 को चढ़ाई जाती है।** मंदिर के पास उपाश्रय के लिए भूमि उपलब्ध है, **कृषि योग्य भूमि भी होना बताई है, ज्ञात नहीं है। ज्ञात करना चाहिये।**

सम्पर्क सूत्र - श्री मिट्ठालाल जी लोढ़ा, फोन : 01470-245455

श्री पार्श्वनाथ भगवान का मंदिर, मण्डफिया (सांवलियाँ)

यह शिखरबंद मंदिर भादसोड़ा ग्राम से 11, मंगलवाड़ चौराहा से व निम्बाहेड़ा से 20 किलोमीटर दूर सांवलियाँ जी के मंदिर के पास स्थित है, कहा जाता है कि पूर्व में इस गाँव में किन्नर लोग रहा करते थे, बाद में भाटी राजपूत रहने लगे उन्होनें किन्नर लोगो को खदेड़ा उसके बाद अन्य सभी जाति के लोग आकर बसने लगे मंदिर के बारे में कहा जाता है कि 500 वर्ष पूर्व जारोली परिवार ने एक प्रतिमा को विराजमान कराई तदुपरान्त संवत् 1900 के लगभग मंदिर निर्माण करा प्रतिष्ठा कराई। मूर्तिपूजक का एक ही परिवार रहता है। उन्होनें मंदिर की भूमि व 8 बीघा जमीन देकर समाज को सेवा के लिए सुपुर्द किया। इसके पश्चात् संवत् 2040 के लगभग आमूलचूल परिवर्तन कर मंदिर का निर्माण कराया । यह तृतीय श्रेणी का ठिकाना रहा है ।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित है :

(भूतल) प्रवेश द्वार के सामने

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 39'' व नाग तक 47'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2046 माघ शुक्ल 5 का लेख है।

प्रवेश करते समय दाई ओर एक देवरी में :

1. श्री सहस्त्रफणा पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की (चार भागो में नाग) 13'' व नाग तक 39'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2050 का लेख हैं।
2. श्री धरणेन्द्र देव की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं हैं।
3. श्री पद्मावती देवी (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

प्रथम मंजिल पर :

1. श्री सुमतिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 25'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2047 ज्येष्ठ शुक्ला 11 का लेख है।
2. श्री नेमिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2047 का लेख हैं।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्याम पाषाण की 11'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2047 का लेख हैं।

उत्थापित चल प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री श्रेयांसनाथ भगवान की 9'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर संवत् 2045 का लेख है।

2. श्री जिनेश्वर भगवान की 13'' ऊँची पंचतीर्थी प्रतिमा है। इस पर वीर संवत् 2511 पोषवदि 6 का लेख है।

3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 2.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

4. श्री जिनेश्वर भगवान की 3.5'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

मंदिर के बाहर आलिओं में :

1. श्री अधिष्ठायक देव की 9'' ऊँची प्रतीक मूर्ति है। सिन्दुर का प्रयोग होता है। कोई लेख नहीं है।

2. श्री श्याम पट्ट 10''x 6.5'' के आकार पर पादुका स्थापित है। कोई लेख नहीं है।

सभामण्डप में दाई ओर भिन्न – भिन्न आलिओं में :

1. श्री माणिभद्र की श्याम पाषाण की 15'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2052 का लेख है।

2. श्री पार्श्वनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 9'' नाग तक 23'' व परिकर सहित 33'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है।

3. श्री कुंथुनाथ भगवान की श्याम पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है।

4. श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है।

सीढ़ियों पर चढ़ते समय दांई ओर एक आलिए में दो अधिष्ठायक देव की प्रतीक मूर्तियां 17'' व 9'' ऊँची है। माली पन्ना का प्रयोग होता है।

दूसरों को बूरा कहने या बुरा
देखने से खुद ही बुरे हो जाते हैं।
जब लोग अच्छे दिखेंगे
तब खुद अच्छे हो जाएँगे ।

श्री आदिनाथ भगवान का मंदिर, आसावरा

यह शिखरबंद मंदिर चित्तौड़गढ़ रेलवे स्टेशन से 48, मंगलवाड़ चौराहा से 18 किलोमीटर दूर सड़क के किनारे स्थित है। श्री जितेन्द्र विजय जी की प्रेरणा से यह मंदिर व दो दुकानें श्री रतनलाल जी नवलखा द्वारा निर्मित कर संवत् 2047 वैशाख शुक्ला 6 को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। नजदीक रेल्वे स्टेशन उदयपुर व चित्तौड़गढ़ है, बस का साधन है।

इस मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

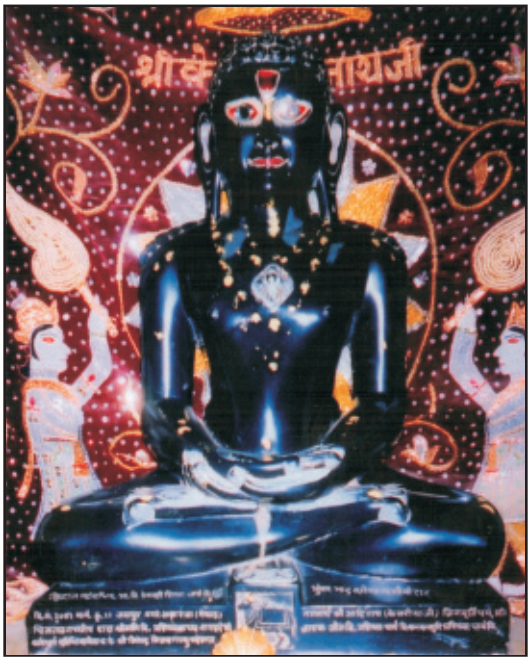

1. श्री आदिनाथ भगवान की (मूलनायक) श्याम पाषाण की 29'' ऊँची प्रतिमा हैं इस पर संवत् 2042 मार्ग कृष्णा 12 का लेख है।
2. श्री विमलनाथ भगवान की (मूलनायक के दांए) श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर संवत् 2045 वै.शु. 5 लुणावा का लेख है।
3. श्री पार्श्वनाथ भगवान की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर संवत् 2045 वै.शु. 5 का लेख है।

उत्थापित प्रतिमाएँ व यंत्र धातु की :

1. श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2056 फागुण सुद 6 का लेख है।
2. श्री सिद्धचक्र यंत्र 4'' का गोलाकार है। इस पर संवत् 2046 ज्येष्ठ शुक्ला 13 का लेख है।

बाहर सभामण्डप में :

1. श्री गौमुख यक्ष की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा हैं। इस पर संवत् 2046 वै.शु. 6 का लेख है।
2. श्री चक्रेश्वरी देवी की श्वेत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर संवत् 2046 का लेख है।

सभामण्डप में दोनों ओर गिरनार तीर्थ के चित्रपट्ट है।

प्रथम मंजिल में शंखेश्वर पार्श्वनाथ का मंदिर स्थापित है।

मंदिर में निम्न प्रतिमाएँ स्थापित हैं :

1. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ की (मूलनायक) श्वेत पाषाण की 23'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2045 वै.सु. 5 का लेख है।
2. श्री शांतिनाथ भगवान की (मूलनायक के दाएं) श्वेत पाषाण की 19'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 वै.सु. 5 का लेख है।
3. श्री वासुपूज्य भगवान की की (मूलनायक के बाएं) श्वेत पाषाण की 17'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 का लेख है।

वेदी के बीच प्रासाद देवी की श्वेत पाषाण की 6'' ऊँची प्रतिमा स्थापित है।

बाहर :

1. श्री माणिभद्र की श्वेत पाषाण की 14'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर सं. 2041 वै. सु.6 का लेख है।
2. श्री नाकोड़ा भैरव की पीत पाषाण की 13'' ऊँची प्रतिमा है। इस पर कोई लेख नहीं है। चक्षु नहीं है।

पीछे उपाश्रय बना है। बाजार में धर्मशाला, भोजनशाला है।

समाज की ओर से मंदिर की देखरेख श्री रतनलालजी नवलखा करते हैं।

वार्षिक ध्वजा वैशाख सुदी 6 को चढ़ाई जाती है।